मोक्ष मार्ग में अहंकार के लिए स्थान नहीं

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में विन्ध्यगिरि पर्वत के ऊँचे शिखर पर गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा दूर से दर्शनीय हो जाती है। फरवरी 2018 में, प्रत्येक 12 वर्ष के अंतराल में होने वाले महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर श्रद्धालुओं के द्वारा इस प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक पहले जल से फिर पंचामृत से किया जाएगा।

महामस्तकाभिषेक का पहला उल्लेख 1398 ई0 के एक प्राचीन शिलालेख में मिलता है, भगवान बाहुबली के साथ बहुत सारी पौराणिक कथाएं जुड़ी है। कहा जाता है कि गंग राजवंश के मंत्री और सेनापति चामुण्डराय जिन्होंने इस प्रतिमा का निर्माण कराया उन्होंने स्वयं इस प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक करने का निर्णय लिया लेकिन वे इस अहंकार से ग्रस्त हो गए कि उन्होंने एक विशाल प्रतिमा का ऊँचे शिखर पर निर्माण कराया है। कहा जाता है, कि जब उन्होंने प्रतिमा का मस्तकाभिषेक करना प्रारम्भ किया तो अभिषेक का जल भगवान बाहुबली की प्रतिमा की नाभि के नीचे नहीं पहुँच पाया और चामुण्डराय का प्रयास निष्फल हो गया, क्योंकि वे तो पूरी प्रतिमा का अभिषेक करना चाहते थे। चामुण्डराय को उनकी भूल बतलाने हेतु यक्षिणी, कुष्माण्डिनी ने एक गरीब वृद्ध महिला का भेष बनाया। उसने श्रद्धालुओं से भेंट कर भगवान बाहुबली की प्रतिमा का अभिषेक करने की अपनी इच्छा जताई। श्रद्धालुओं ने इस वृद्ध महिला की इच्छा को गंभीरता से नहीं लिया क्योंकि इस वृद्ध महिला के पास भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा का अभिषेक करने के लिए जो पात्र था वह बहुत छोटा था, फिर भी जब उस महिला ने भगवान बाहुबली की प्रतिमा का अभिषेक किया तो उस पवित्र जल से पूरी प्रतिमा का अभिषेक हो गया और वह जल एक सरोवर में इकट्ठा हो गया और इसी से श्रवणबेलगोला नाम पड़ा अर्थात श्रवण का श्वेत सरोवर।

उक्त घटना से राजा चामुण्डराय का अहंकार टूट गया और उन्होंने मुख्य मंदिर के दरवाजे के बाहर भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा के सामने यक्षिणी, कुष्माण्डिनी की भी प्रतिमा बनवाई। कहा जाता है कि जैन परम्परा में यक्ष और यक्षिणी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वे धर्म सभा का आयोजन करते हैं। भगवान के केवल ज्ञान कल्याणक के परचात् यक्ष और यक्षिणी आते हैं। प्रत्येक कल्याण के लिए अलग - अलग जाति के दवों को जिम्मेदारी सौंपी जाती है। प्रत्येक तीर्थंकर के जीवन काल में होने वाली पाँच मांगलिक घटनाओं को पंच कल्याणक कहा जाता है और वे हैं - गर्भ कल्याणक, जन्म कल्याणक, दीक्षा कल्याणक केवल ज्ञान कल्याणक और निर्वाण कल्याणक। जब तीर्थंकर माता के गर्भ में आते हैं तो तीर्थंकर की माता की सेवा के लिए अष्ट कुमारियाँ आती है। तीर्थंकर के जन्म के समय उनका पाण्डुक शिला पर अभिषेक करने के लिए सौधर्म, ईशान, सनतकुमार और महेन्द्र इन चार स्वर्गों के इन्द्र देवताओं के साथ आते हैं। तीसरे दीक्षा कल्याण के समय लोकांतिक देव भी आकर वैराग्यवर्धक उपदेश देते हैं। जब तीर्थंकर को केवल ज्ञान होता है तो इन्द्र की आज्ञा से कुबेर समवशरण की रचना करता है। समवशरण की बारह सभाओं में यथा स्थान देव मनुष्य, तिर्यंच मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका आदि भगवान का उपदेशामृत पान करतें हैं। इन्ही पाँच कल्याणकों के प्रतीकात्मक स्वरूप महामस्तकाभिषेक के पूर्व पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन 7 फरवरी श्रवणबेलगोला में होगा।

जगद्गुरू स्वास्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक जी बताते हैं, कि भगवान बाहुबली तप और त्याग के प्रतीक है। वे वीतरागता की प्रतिमूर्ति हैं और दीक्षा आत्मशुद्धि के लिए होती है। शरीर तीन प्रकार के होते हैं - एक माता - पिता के द्वारा प्रदत्त स्थूल शरीर, दूसरा पूर्व जन्मों के कर्मों से निर्मित कर्मण शरीर और तीसरा तेजस शरीर। हम स्वयं अपने मन, वचन और कर्म की कार्बन कॉपी स्वयं के लिए तैयार करते है और अपने अगले जन्म में वैसे ही अपनी स्थूल काया में आत्मा स्वरूप अपनी पूर्व जन्म का प्रतिकृत स्थापित करते हैं, जैसे हार्डवेयर मे सॉफ्टवेयर। इसलिए यदि मुक्तिमार्ग पर चलना है तो पहले अपने सॉफ्टवेयर से पाप कर्मों को मिटाना होगा फिर उसमें पुण्य कर्मों को डालना होगा। तेजस शरीर एक ऊर्जा का स्रोत है, जिसका उपयोग ध्यान में करनें से पाप कर्मों का क्षय करने की शक्ति मिलती है।

महामस्तकाभिषेक में श्रद्धालु भगवान बाहुबली के प्रति अपनी विनयांजली अर्पित करते हैं, प्रतिफल में वे भगवान बाहुबली के आदर्शों को और अच्छे से समझ पाते हैं। अभिषेक के दौरान क्रोध, माया, लोभ, और अहंकार क्षय होना चाहिए। सन् 2006 में आयोजकों ने महामस्तकाभिषेक का पहला अवसर उस व्यक्ति को दिया जिसने श्रवणबेलगोला में बच्चों के अस्पताल का निर्माण कराया। अस्पताल की आधारशिला रखने के बाद जब उस व्यक्ति ने अस्पताल निर्माण की प्रतिज्ञा की, तब उन्हें भगवान बाहुबली का अभिषेक करने की अनुमति दी गई। मोक्ष मार्ग में अहंकार के लिए कोई स्थान नहीं है।

- स्वराज जैन, टाईम्स ऑफ इंडिया

प्राचीन और पावन जैन तीर्थ श्रवणबेलगोला

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रवण बेलगोला, ग्राम श्रवण बेलगोला तहसील चन्द्रराय पट्टन जिला हासन, कर्नाटक मे स्थित है। क्षेत्र में मंदिरों की संख्या बहुत है, पर्वत, तलहटी व ग्राम में अनेक जिनालय हैं, दो पहाड़ों विंध्यगिरी पर 644 एवं चन्द्रगिरि पर 200 सीढ़ीयां है। चढ़ने के लिए दोनों ही सीढ़ियां बहुत कम ऊंचाई की है। यहां डोली की व्यवस्था भी है। यहां दो हजार यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था भी है। भोजन नि:शुल्क है।

श्रवण बेलगोला जैनों का अति प्राचीन और परम् तीर्थ है। जैन इतिहास में इसका विशिष्ट स्थान है। उत्तरवासी इसे जैनबद्री कहते है। यह जैन काशी और योमह तीर्थ नामों से भी प्रसिद्ध रहा है। एक हजार साल से भी अधिक पूर्व महामात्य चामुण्डा रायजी ने आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती के सानिध्य में इन्द्रगिरी पर्वत पर भगवान बाहुबली की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी। यह मूर्ति लगभग 57 फीट ऊंची उत्तरमुखी, खड्गासान, संसार की अनुपम अद्वितीय एवं अतिशय सम्पन्न विशाल प्रतिमा है। इस भव्य मूर्ति का महामस्तिकाभिषेक 12 सालों के अन्तराल से होता है। यह दक्षिण भारत का प्रमुख जैन तीर्थ व पर्यटन स्थल है। चन्द्रगिरि पर्वत पर अनेक प्राचीन मंदिर एवं बहुमूल्य शिलालेख है जिनमें प्राचीन जैन इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। यहां लगभग 580 शिलालेख जैनों की गौरव गाथा का उल्लेख करते हैं। श्री भट्टारक चारूकीर्तिजी का निवास जैन मठ है। विंध्यगिरि पर्वत समुद्र तल से 3500 फीट ऊंचा है। तलहटी में कल्याणी सरोवर के निकट से 644 सीढ़ियां बनी है। चन्द्रगिरि समुद्र तल से 3100 फीट ऊंचा तथा नीचे के मैदान से 175 फीट की ऊंचाई पर है। चढ़ने को 200 सीढ़ियां हैं। शिलालेखों से विविद होता है कि ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक यह क्षेत्र अनेक जैन साधकों की साधना एवं मोक्ष स्थली रहा है।

श्रवण बेलगोला गांव के दोनो ओर दो मनोकर पर्वत विंध्यगिरि इन्द्रगिरि और चन्द्रगिरि है। गांव के बीच में कल्याणी सरोवर है। इन्द्रगिरि को यहां लोग बड़ा पहाड़ कहते हैं। इस पर चढ़ने के लिए 644 सीढ़ियां बनीं हुई है। इस पर्वत पर चढ़ते ही पहले ब्रह्मदेव मंदिर पड़ता है जिसकी अटारी में पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति है। पर्वत की चोटी पर पत्थर की प्राचीन दीवार का घेरा है जिसके अन्दर बहुत से प्राचीन जैन मन्दिर है। घुसते ही चौबीस तीर्थंकर व सदि का एक छोटा से मंदिर है। इसमें चौबीस तीर्थंकर विराजमान है। इसकी स्थापना सन् 1648 में हुई थी। इस मंदिर में उत्तर पश्चिम में एक कुंड है। उसके पास दूसरा मंदिर है, इसमें भगवान चन्द्रप्रभु की पूजा होती है। मंदिर के सामने एक मान स्तंभ है। यह मंदिर लगभग 1673 ई0 में चेन्नगण ने बनवाया था।

इसके आगे चबूतरे पर बना हुआ ओदंगल व सदि नामक मंदिर है। यह कंकड़ का बना हुआ है। मंदिर के मध्यभाग में एक बहुत ही सुंदर कमल लटका हुआ है। श्री आदिनाथ भगवान की जो प्रतिमा दर्शनीय है। श्री शान्तिनाथ और नेमिनाथ की भी सुंदर प्रतिमाएं हैं।

पर्वत पर ही एक छोटे से घेरे में भगवान श्री बाहुबली गोम्मट स्वामी की विशालकाय मूर्ति विराजमान है। यहां पुरूष, महिला दोनों ही प्रक्षाल करते हैं। इसके सामने ही पूजा स्थल बना है। इसके बाहर भव्य संगतराशी का त्यागद् ब्रह्मदेव स्तंभ नामक सुंदर स्तंभ छत से ऊपर लटका हुआ है। इसे गंगतंश के राजमंत्री सेनापति चामुंडा ने बनवाया था। जो गोम्मट सार के रचियता श्री नेमिचंद्राचार्य के शिष्य थे। गुरू और शिष्य की मूर्तियां भी उस पर अंकित है। इस स्तम्भ के सामने ही गोम्मटेश की मूर्ति के प्रकार में घुसनें का अखण्ड द्वार है। वह एक शिला का बना है। इस द्वार के दाहिने ओर बाहुबली का छोटा मंदिर और बांई और उनके बड़े भाई भरत भगवान का मंदिर है, पास वाली चट्टान पर सिद्ध भगवान की मूर्तियां है। वहीं सिद्धर बसदि है, पास ही दो सुंदर स्तम्भ है। वहीं पर ब्रह्मदेव स्तंभ है।

श्री बाहुबली श्री तीर्थकर ऋषभदेव के पुत्र और भरत जी के भाई थे। राज्य के लिए दोनो भाइयों में युद्ध हुआ था। बाहुबली की विजय हुई परंतु उन्होंने राज्य अपने भाई को दे दिया और स्वयं तप कर सिद्ध परमात्मा हुए। भरतजी ने पोदनपुर में उनकी बृहत्काय मूर्ति स्थापित की। कालान्तर में उसके चहुंओर इतने कुक्कट सर्प हो गये की दर्शन करने दुर्लभ हो गये। गंगराजा सचमल्ल के सेनापति चामुंडराय अपनी मां की इच्छानुसार उनकी वन्दना करने के लिये चले परन्तु उनकी यात्रा अधूरी रही। इसलिए उन्होंने श्रवणबेलगोला में ही एक वैसी ही मूर्ति स्थापित करने का निश्चय किया। उन्होंने चन्द्रगिरि पर्वत पर, जिसे अब चामुंडराय शिला कहा जाता है, खड़े होकर एक स्वर्ण तीर मारा। वह इन्द्रगिरि पहाड़ की एक चट्टान में जा बसा। उस चट्टान में उनको गोम्मटेश्वर के दर्शन हुये। चामुण्डराय ने श्री नेमिचंद्राचार्य की देखरेख में मूर्ति बनवाई। यह घटना सन् 983 के लगभग की है। यह मूर्ति उत्तराभिमुख है और हल्के भूरे रंग की महीन कंकरीले पत्थर (ग्रेनाइट) को काटकर बनाई गई है। इस मूर्ति के चारों और छोटी देव कुलिकाएं हैं, इनमें तीर्थंकर भगवान की मूर्तियां विराजमान हैं।

- स्वराज जैन, टाईम्स ऑफ इंडिया

महामस्तकाभिषेक महोत्सव कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन चेन्नई ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी मोदी को आमंत्रित किया। प्रधानमंत्री महोदय ने कार्यक्रम में आने की स्वीकृति दी।

विद्यासागर संत शाला का लोकार्पण

ललितपुर में आचार्य विद्यासागर महाराज के 50वें संयम स्वर्ण महोत्सव के अंतर्गत आदिनाथ जैन मंदिर नई बस्ती में नवनिर्मित संतशाला जैनाचार्य "श्री विद्यासागर निलय" का मुनिश्री अभयसागरजी महाराज के ससंघ सानिध्य में श्रीमती गेंदाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री चंपालालजी नीहरकलां, श्री प्रदीप कुमार, श्री प्रसन्न कुमार नीहरकलां ने लोकार्पण किया। इसे विधानाचार्य ब्रह्मचारी नितिन भैयाजी ने विधिपूर्वक कराया। मुनि श्री अभय सागरजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा संत समाज के पथ प्रदर्शक है। आज नईबस्ती में संतशाला के शुरू होने के साथ ही यहां पर संतों के ठहरने की व्यवस्था की है। समाज को अब संतजनों का सानिध्य मिलता रहेगा।

डॉ. ज्योति जैन को मिला सुधा सागर पुरस्कार

राजस्थान की मार्बल नगरी मदनगंज-किशनगढ़ में धर्म सेवा, समाज सेवा, साहित्य सेवा के साथ साथ जैन धर्म संस्कृति के संरक्षण में अपना योगदान देने वाली डॉ. ज्योति जैन को मुनि पुंगव सुधा सागर महाराज पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुज्य मुनि सुधा सागर जी महाराज ने कहा कि यह व्यक्ति का नहीं जिनवाणी आराधकों का सम्मान है। आज समाज अनेक विसंगतियों का सामना कर रहा है। आचार्य शिरोमणि विद्यासागर महाराज के संयम स्वर्ण जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में उनके संपूर्ण साहित्य एवं उस पर आधारित विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुनि सुधा सागर सम्मान प्राप्त कर डॉ. ज्योति जैन ने इसे अपने संपूर्ण जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि माना है।